विषय :- पारिस्थितिक स्वच्छता और समाज।

पारिस्थितिक स्वच्छता, हमारी स्वच्छता।

परिस्थिति, जो कि मनुष्य जीवन का आधार है। यह हमारी जीवन में बहुत बड़ी भूमिका निभाती है। मनुष्य और परिस्थिति के बीच एक अनमोल रिश्ता है जो शब्दों में कह न सकें। यह हम अक्सर भूलते है कि हमारी हर कदम परिस्थिति को कई तरह प्रभावित कर सकते है। जैसे ही हमारी हर कदम परिस्थिति को प्रभावित कर सकते है वैसे ही परिस्थिति में होने वाले गतिविधियाँ हमें प्रभावित कर सकते है।

स्वच्छता हमारी जीवन में बहुत बड़ी हिस्सा निभाती है। जैसे शरीर को हम स्वच्छ और शुद्ध बना के रखते है वैसे ही हमारी परिस्थिति को भी साफ रखना होगा। परिस्थिति को स्वच्छ बना के

रक्षना समाज की हर सदस्य कि दायित्व है। समाज और उसके वजह से हुए पारिस्थितिक स्वच्छता का हनन, एक अनदेखी समस्या हो चुकी है।

हम मनुष्य अक्सर स्वार्थ बन जाते है। हम सिर्फ अपने बारे में सोचते है और किसी और का कोई ~~पर्वा~~ पर्वा नहीं। इस लापरवाही को वजह से मानव जीवन कई तरह प्रभावित होती है। परिस्थिति की स्वच्छता रखने में समाज एक बड़ी हिस्सा निभाती है। दिन-ब-दिन हम देख सकते है कि हमारी परिस्थिति किस तरह प्रदूषित हुई है। मानव की कई कर्तव्यों को वजह से वे अपने आप को तबाही में डाल रही है।

एक इंसान की ~~विकास~~ मानसिक और शारीरिक विकास और स्वास्थ्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य स्वच्छता ही है। स्वच्छता के बिना एक इंसान अधूरा रह जाती है। जब एक

इंसान अपनी शरीर को स्वच्छ बना के रख सकती, क्यों उसकी परिस्थिति को अक्सर स्वच्छ रख ना पाई? यह परिस्थिति ही हमारी घर और हमारी माँ है। जब हम अपनी माँ की ख़्याल नहीं रखते तो कौन रखेगा?

~~आज-कल~~ ~~सभ~~ आजकल समाज की हर शख़्स ही उनकी विनाश तैयार करती है। अपनी परिस्थिति को नज़र अंदाज़ और अवहेलन करके वो अपनी ख़ुशी के पीछे भागने की चक्कर में है। जब समाज की कई लोग परिस्थिति को भूलते है कई लोग परिस्थिति को दुःख और दर्द पहुँचाते है। हमारी परिस्थिति और पर्यावरण की संरक्षण हमारी दायित्व है हालांकी पैसे की लत में भागने वाले इस युग को इससे कोई लेन-देन नहीं।

दिन-ब-दिन पारिस्थितिक स्वच्छता कम होती जा रही है। लोग सारी कचड़े सड़कों

और दूसरों की घरों में डालते है। प्लास्टिक जैसे चीज़ों से भरा हुआ है सारी दुनिया। तालाब, समुद्र धीरे-धीरे खराब होने लगा है। मनुष्य अब परिस्थिति को प्रदूषित करने कि चक्कर में है। उसे क्या पता वो अपनी मौत खुद लिख रही हो? अब दुनिया कचड़े से भरी हुई है। कीटनाशकों जैसी चीज़ खेती में इस्तेमाल करते जा रही है। प्लास्टिक जैसे वस्तु के उपयोग बढ़ते जा रहे है। कार्बन डायऑक्साइड से वायुमंडल प्रदूषित होते जा रही है। अब इस दुनिया धीरे-धीरे जीने के लायक ना बनी। जलवायू में परिवर्तन बढ़ते जा रहे है। इससे सिर्फ मानव जीवन नहीं बल्कि इस दुनिया में जीवित हर चीज़ प्रभावित होती जा रही है और जब समाज के लोग इसके बारे में सोचने लगे तब बचने को कुछ नहीं रहेगा।

आज के युग कई क्षेत्र में विकास और

प्रगति हासिल की है। कई क्षेत्र में विकास होती जा रही है लेकिन इस विकास के नाम पर परिस्थिति को दुख पहुँचाना सबसे बड़ी गलती है। आज की युग की सबसे बड़ी चुनौती यह ही है, कि विकास के नाम पे परिस्थिति के स्वच्छता को असंतुलित बनाती है समाज कि इस तरह कि स्वभाव कई समस्याएँ उत्पन्न कर सकती है।

इस युग में देखने वाला एक बड़ी चुनौती है बिना सोच के काम करना। इससे ना उनकी जिंदगी खराब हो जाती है बलिक समाज की कई सदस्यों पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। परिस्थितिक स्वच्छता ना होने से कई बीमारियाँ फैला चुकी है। कोविड-19 जैसे खतरनाक बीमारियाँ इस दुनिया में आने कि एक बड़े हिस्सा हम समाज की हर सदस्यों निभाती है। ना सिर्फ बीमारी बल्कि जल में जीवित वस्तुओं पर भी खतरनाक असर डाल सकती है। बीमारियाँ फैलाना, जलवायु परिवर्तन,

कई वस्तुओं के मृत्यु , इस दुनिया की पर्यावरण को असंतुलित बनाना यह, सब स्वच्छता की ना होने से बढ़ती जा रही हैं।

अब समय हुई है की हम सब कदम उठाए। परिस्थिति की स्वच्छता के लिए कठिन कानून बनाना ज़रूरी है। यदि स्वच्छता पालन नहीं किया तो कठिन दण्ड में कारावाय मिलनी चाहिए। परिस्थित की स्वच्छता ना पालन करना कानूनन जुर्म की तरह मानना चाहिए और इस के लिए हमारी सरकार सही कानून हमारे सामने पेश करना पड़ेगा। जब सरकार और समाज एक साथ मिलकर काम करे तो किसी भी कार्य असम्भव नहीं होते। समाज के लोग एक साथ मिलकर शुचित्व के लिए पूरी समाज को जागरूक बनाना पड़ेगा। उन्हें स्वच्छता का महत्व पर शिक्षित करना होगा ताकी उन्हें सही और गलत का एहसास बन जाए। विद्यालयों में सिर्फ

बच्चों के लिए नहीं बल्कि सब को पारिस्थितिक स्वच्छता का महत्व पर शिक्षित करना पड़ेगा। पूरे समाज में स्वच्छता ना होने के नकारात्मक प्रभावों पर जागरूक बनने से लोग धीरे-धीरे इस अभिशाप से स्वतंत्र होंगे।

हमें वो बदलाव बनने चाहिए जो हम समाज में देखना चाहते हो और इसी वाक्य से हम कह सकते हैं कि बदलाव की शुरुआत हमेशा अपने आप से होनी चाहिए। किसी और की कर्तव्यों हमारी कर्तव्यों पर बुरी असर नहीं डालनी चाहिए। सिर्फ वो करनी चाहिए जिससे हमारी और हमारी समाज को भला हो सकती है।

पारिस्थितिक स्वच्छता सिर्फ एक इंसान का दायित्व नहीं बल्कि पूरी दुनिया की जिम्मेदारी है। एक बदलाव के परिणाम व्यक्त होने के लिए समाज के हर एक इंसान को प्रयास करना

होगा। यह बदलाव तब सफल होगा जब समाज के हर एक शख्स और सरकार मिलकर कठिन प्रयास करें। ऐसे ही हमें एक सशक्त एवं शांत समाज में जी सकूँगी। पारिस्थितिक स्वच्छता हमारी स्वच्छता है और जब तक यह स्वच्छता रहेगा तब तक इस समाज भी रहेगी ।।